

पवन द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ

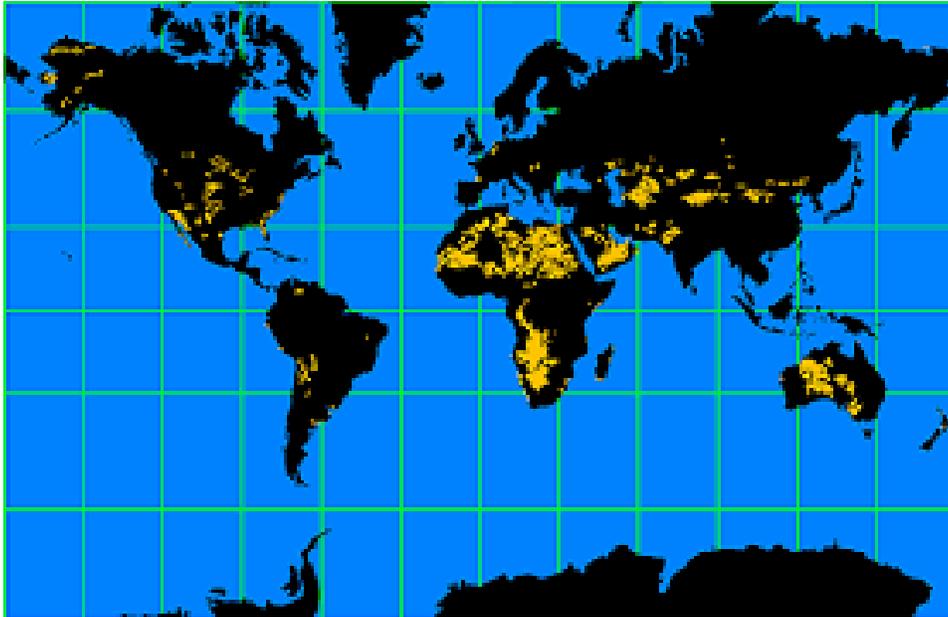
Wind and associated topography

*बोलेंद्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल,
राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान*

अर्द्धशुष्क तथा शुष्क मरुस्थल के भागों में पवन अपरदन का सबसे शक्तिशाली साधन है क्योंकि यहाँ वर्षा नाम मात्र की होती है तथा आर्द्रता और वनस्पति का अभाव में मिट्टी के कण ढीले रहते हैं। यहां पवन को यांत्रिक अपक्षय में बहुत सहायता मिलती है। उचाई पर पवन द्वारा कटाव कम और भूतल के निकट अधिक होता है क्योंकि बालू के कण अधिक ऊंचे नहीं उठ पाते।

पवन का कार्य विश्व के निम्नलिखित मरुस्थली क्षेत्रों में स्पष्ट दिखता है

- सहारा तथा मध्य एशिया का प्रदेश - सहारा रेगिस्तान, अरब का रेगिस्तान, भारत का थार मरुस्थल, तकला माकन, गोबी मरुस्थल
- दक्षिण अफ्रीकी प्रदेश - कालाहारी, नामीबिया का मरुस्थल, कारू मरुस्थल
- दक्षिण अमेरिकी प्रदेश - अटाकामा, चिली तथा पेरू तट के सहारे पेटागोनिया मरुस्थल
- उत्तरी अमेरिकी प्रदेश - कैलिफोर्निया तथा एरिजोना के मोजावे मरुस्थल एवं मेक्सिको का सोनोरो मरुस्थल
- ऑस्ट्रेलिया का मरुस्थल



चित्र स्रोत: <http://www.physicalgeography.net/fundamentals/10ah.html>

पवन द्वारा अपरदन, परिवहन तथा निक्षेपण द्वारा कई प्रकार के स्थल आकृतियों का निर्माण किया जाता है। in स्थलाकृतियों को एओलियन टोपोग्राफी भी कहा जाता है।

पवन के अपरदन द्वारा उत्पन्न स्थलाकृतियां

पवन अपवाहन, अपघर्षण तथा सन्निघर्षण द्वारा मरुस्थलीय क्षेत्र में निम्नलिखित प्रकार के स्थलाकृतियों का निर्माण करता है:

1. ब्लोआउट
2. छत्रक शिला
3. जीवन
4. यार डॉन
5. इंसलबर्ग
6. ड्राई काउंटर
7. जालीदार सिला

अपवाह बेसिन: पवन के अपवाहन कार्य द्वारा अर्धशुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में धरातल पर बिछे रेत को उड़ाया जाने के कारण छोटे-छोटे गर्तों का निर्माण होता है जो क्रमशः बढ़कर विशाल आकार धारण कर लेते हैं। इन्हीं गर्तों को बात गर्त कहा जाता है।

छत्रक शिला / गारा / मशरूम रॉक: यह पवन के अपघर्षण से बनी वह स्थलाकृति है जो कुरकुरमुत्ता जैसी लगती है। चट्टानों के निचले भाग में अधिक कटाव होने के कारण ऐसी आकृतियां बनती हैं।



चित्र स्रोत: <https://www.pmfias.com/arid-landforms-erosional-depositional-wind-eroded-water-eroded-arid-landforms/>

ज्यूजेन: यह दवातनुमा आकृति है जिसका निर्माण वहां होता है जहां मुलायम और कठोर चट्टानों की परतें क्षैतिज अवस्था में होती हैं। चट्टानों की दरारों में ओस भरने और रात में तापमान कम होने से मुलायम चट्टानों का अपरदन होने लगता है। कठोर चट्टानी भाग टोपी की भांति नजर आने लगते हैं। इन्हें ही ज्यूजेन कहते हैं।

यारडांग: कठोर और मुलायम चट्टानों की परतें जब पवन के प्रवाह की दिशा में स्थित होती हैं तो कड़ी चट्टानों के अपेक्षा मुलायम चट्टानें अधिक कटने लगती हैं तथा वहां नालीनुमा गड्ढे बन जाते हैं। इसे ही यारडांग कहा जाता है।

इंसलबर्ग: पवन के प्रभावकारी अपरदन से जब चट्टानी भाग कट-छट कर समतल हो जाता है तथा यत्र तत्र कठोर चट्टानों टीले के रूप में उभरे रह जाते हैं तो इन्हें इंसलबर्ग कहा जाता है।



चित्र स्रोत: <https://www.pmfias.com/arid-landforms-erosional-depositional-wind-eroded-water-eroded-arid-landforms/>

ड्राईकांटर: भूमि पर बिछे कठोर चट्टानों पर बालू युक्त हवा का आघात पड़ने से उनका आकार घिस कर चिकना और त्रिभुजाकार हो जाता है। यह त्रिभुजाकार टुकड़े ही ड्राईकांटर कहलाते हैं।

जालीदार शिला: जब तीव्र गति से चलने वाली पवन के मार्ग में विविधता पूर्ण रासायनिक संरचना वाली चट्टान उपस्थित होती है तो उसके कोमल भागों को काटकर पवन आर-पार प्रवाहित होने लगती है जिससे वह चट्टान जाली के समान दिखाई पड़ने लगती है।

पवन के द्वारा निक्षेपात्मक स्थलाकृतियाँ

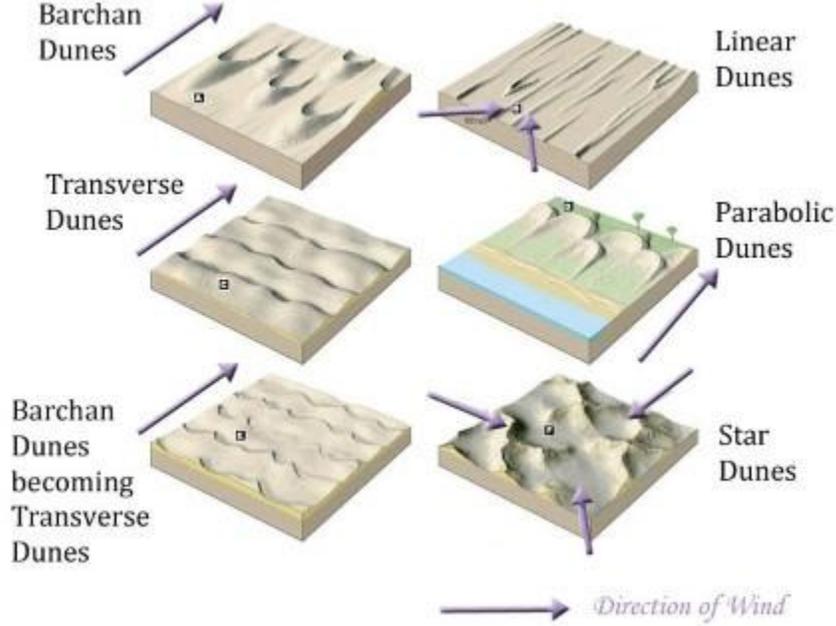
- बालुका स्तूप
- लोयस मैदान
- प्लाया
- बाजदा



चित्र: Ripple marks

चित्र स्रोत: <https://www.pmfias.com/arid-landforms-erosional-depositional-wind-eroded-water-eroded-arid-landforms/>

बालुका स्तूप: ऐसे टीले जो हवा द्वारा उड़ा कर लाए गए रेत आदि पदार्थों के जमाव से बनते हैं बालुका स्तूप कहलाते हैं। यह पवन की दिशा में खिसकते या स्थानांतरित होते रहते हैं। बरखान अर्धचंद्राकार बालू का टीला होता है। इसके दोनों छोर पर आगे की ओर नुकीली सींग जैसी आकृति निकली रहती है। लूनेट, हवेलबैक स्तूप, तारा स्तूप, सीफ आदि भी बालुका स्तूप के विभिन्न प्रकार हैं।



चित्र स्रोत: <https://www.pmfias.com/arid-landforms-erosional-depositional-wind-eroded-water-eroded-arid-landforms/>

लोयस: पर्वतीय क्षेत्रों के बाहर पवन द्वारा उड़ा कर लाए गए महीन बालू कणों के वृहत निक्षेप को लोएस कहते हैं। इसकी मिट्टी जल के मिलने पर अत्यंत उपजाऊ हो जाती है। चीन के उत्तरी मैदान में लोयस मिट्टी मिलती है जो गोबी मरुस्थल से उड़ा कर लाई गई है। ऑक्सीकरण के कारण इसका रंग पीला होता है।



चित्र स्रोत: <https://www.pmfias.com/arid-landforms-erosional-depositional-wind-eroded-water-eroded-arid-landforms/>

पेडिमेंट: मरुस्थलीय प्रदेश में किसी पर्वत, पठार या इन्सेलबर्ग के पदीय प्रदेशों में मिलने वाले सामान्य ढालयुक्त अपरदित शैल सतह वाले मैदान को पेडिमेंट कहा जाता है ।

प्लाया: मरुस्थल की अन्तःप्रवाहित नदियां वर्षा के बाद अस्थाई झीलों का निर्माण करती हैं जिन्हें प्लाया कहते हैं । खारे जल के प्लाया को सैलीनास कहते हैं ।

बाजदा: इनका निर्माण प्लाया के नीचे तथा प्लाया के किनारे पर जलोढ़ पंख के मिलने से होता है ।

इस प्रकार अपरदन के अन्य कारकों के समान पवन भी अपरदन तथा निक्षेपण का एक प्रमुख कारक है । वैसे पवन का कार्य अत्यधिक विस्तृत होता है परंतु अर्धशुष्क तथा शुष्क मरुस्थल के भागों में पवन अपरदन का एक सक्रिय कारक होता है । पवन द्वारा शुष्क एवं अर्धशुष्क प्रदेशों में अपरदन तथा निक्षेपण द्वारा विभिन्न प्रकार के स्थलाकृतियों का निर्माण किया जाता है ।

सन्दर्भ: भौतिक भूगोल: SBPD प्रकाशन, भौतिक भूगोल: सबिन्द्र सिंह, विश्व का भूगोल: महेश बर्णवाल
